वी.सी.डी. नं-1321, झोटवाड़ा (राजस्थान)

ता.-06.07.10

84 का चक्र है, 84 लाख का नहीं

आज का प्रातः क्लास है, 04 नवम्बर, 1968। रूहानी बाप तुम बच्चों को स्वदर्शन चक्रधारी बनाते हैं। बनाने वाला कौन और किसको बनाते हैं? बनाने वाला है रूहानी बाप और बनाते हैं बच्चों को। तो रूहानी बाप के रूहानी बच्चे होने चाहिए। रूहानी बाप के बच्चे जिस्मानी होंगे क्या? जैसा बाप वैसे बच्चे। बाप साँप तो बच्चा भी साँप। बाप हाथी तो बच्चा चींटी? (ना,) बच्चा भी हाथी। तो यहाँ स्वदर्शन चक्रधारी बनाने वाला बाप है और रूहानी बाप है, रूहों का बाप है। रूह अर्थात् आत्मा; देह तो नहीं। देहों का बाप है? देहों का बाप नहीं है, रूहानी बाप है। रूह अविनाशी है, रूहों का बाप भी अविनाशी है। देह विनाशी है, आज है, कल नहीं रहेगी। जन्म-जन्मांतर भी नहीं रहेगी। देह रहेगी? नहीं रहेगी। क्या रहेगी? आत्मा तो रहेगी। तो आत्मा स्व है। अपनापन किससे है- देह से या आत्मा से? अपनापन देह से नहीं है। देह में लगाव हो गया है, अपनी देह में, दूसरों की देह में, देह के पदार्थों में, तो उनको अपना समझते हैं; लेकिन देह ही अपनी नहीं है। आज दिखाई पड़ रही है, कल एक्सिडेंट हुआ और खेल खलास। एक सेकेण्ड का भी पता नहीं है कि यह देह हमारी है (भी) या... (सभी ने कहा- नहीं) देह के पदार्थ हमारे हैं? देह के सम्बंधी हमारे हैं? (सभी ने कहा- नहीं) वे भी नहीं हैं। स्व माने अपनी, क्या है? आत्मा और अपना है बाप। आत्मा का बाप कौन? रूहानी बाप। वो भी अपना है। जो 99 साल अपना रहे और सौवीं साल में पराया हो जाए, तो उसे अपना कहें या पराया कहें? (सभी ने कहा- पराया) अन्त मते सो गते हो गई; लेकिन एक ही बाप ऐसा है, जो आज भी अपना है, कल भी अपना रहेगा और परलोक में भी अपना रहेगा। वो कभी पराया नहीं होता।

जो सदैव अपना है, रूहानी बाप, वो हमको स्वदर्शन चक्रधारी बनाते हैं। स्व माने आत्मा, दर्शन माने देखना, चक्र माने 84 का चक्र। 84 के चक्र में हमारी आत्मा ने कैसे-2 पार्ट बजाया है, वो बताते हैं। एक जन्म की बात नहीं बताते। आत्मा ऐसा रिकॉर्ड है जिसमें 84 जन्मों का (भी) अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। वो अविनाशी पार्ट की बात बता करके हम आत्माओं को स्वदर्शन चक्रधारी बनाते हैं। उन गुरुओं ने क्या समझ लिया? कि भगवान ने कोई रथ का पहिया लिया और वह घुमाया, वह स्वदर्शन चक्र था। अब उस रथ के पहिये की बात नहीं है, यह शरीर रूपी रथ है। शास्त्रों में क्या कहा है? "**आत्मानं रथिनं विद्धि, शरीरं रथमेव च। बुद्धिं तु सारथिं, विद्धि मनः प्रग्रहमेव च। इन्द्रियाणि हयानाहुः .....**" (कठोपनिषद् 1.3.3-4) शरीर को रथ समझ, इन्द्रियों को घोड़ा समझ। यह शरीर रूपी रथ है। इस रथ में यह स्व आत्मा बैठी हुई है। यह आत्मा को, 84 के चक्र में हम कैसे अपना पार्ट बजाते हैं, वह (तरीका राम) बाप बताते हैं अर्थात् तुम इस 84 के चक्र को जान जाते हो। 84 के चक्र में हमारी आत्मा इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर कैसे-2 पार्ट बजाती है?

यह सृष्टि क्या है? स्टेज है (बेहद) ड्रामा का। यह दुनिया विराट ड्रामा है। इस ड्रामा में हम आत्मा कैसे-2 पार्ट बजाते हैं, उस सारे चक्र को हम जान जाते हैं। किसके द्वारा? (राम) बाप के द्वारा। आगे नहीं जानते थे। बाप मिला तो हमको रियलाइज़ कराता है कि हम (फिर से) 84 के चक्र में आने वाले हैं, कम जन्म लेने वाले हैं या ज़्यादा जन्म लेने वाले हैं। 84 से ज़्यादा जन्म तो मिलते नहीं। वे गुरु लोग तो बताते हैं- सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग का यह चक्र लाखों वर्ष चलता है। बाप कहते हैं लाखों वर्ष की तो बात कोई बता भी नहीं सकता। यह

लाखों वर्ष का चक्र तो कोई बुद्धि में घुमा ही नहीं सकता। वे तो इसलिए कह देते हैं कि किसी को बताना न पड़े। कोई पूछे कि लाखों के चक्र की हमें बात समझाओ तो। तो समझा सकेंगे? नहीं। यह सिर्फ 84 का चक्र है, जिसमें, सतयुग में, त्रेता में, द्वापर में, कलियुग में, कैसे-2 हमने जन्म लिए हैं, जन्म लेते-2, सुख भोगते-2 हमारी आत्मा की बैटरी कैसे-2 खाली होती गई। तो बैटरी खाली होगी तो शक्ति कम हो जाएगी या ज़्यादा हो जाएगी? शक्ति कम हो गई, होती चली गई। जब शक्ति कम होती चली गई, तो सतयुग के मुकाबले नीचे के युगों में हमारी आयु क्षीण हो जाएगी या बढ़ेगी? क्षीण हो जाएगी। उन्होंने तो शास्त्रों में लिख दिया- द्वापरयुग में ऐसे-2 महात्माएँ होते थे जिनकी हज़ारों साल उम्र होती थी। बाप कहते हैं- ये सब गपोड़े हैं। सतयुग में भी आत्मा की आयु, एवरेज एज निर्धारित है, फिर त्रेता में भी निर्धारित है। हाँ, सतयुग के मुकाबले (त्रेता में) कम होगी; क्योंकि शरीर से ही सुख भोगा जाता है ना, तो शरीर से सुख भोगते-2 आत्मा की बैटरी क्षीण होती है। द्वापर में और भी क्षीण हुई, तो एवरेज एज और ही कम हो जाती। कलियुग में एवरेज एज 30 साल (भी) रह गई (थी)। अभी आज (भारत) में मनुष्य की एवरेज (एज) कितनी है ? 68 साल से ज़्यादा नहीं बताई। भले विदेशों में ऐसे लोग भी होते हैं जिनकी सौ-150 साल (से ज्यादा) एज भी होती है;। वो विदेशों वाली अन्तिम क्षण में उतरने वाली आत्माएँ हैं। कब से? जब से स्टालिन और लेनिन आये। वो भगवान को नहीं मानते। स्वर्ग को नहीं मानते, आत्मा को नहीं मानते, परमात्मा को नहीं मानते। नास्तिक। ऐसे किस्म की जो आत्माएँ हैं वो इस सृष्टि पर लास्ट में उतरती हैं। कहाँ से आती हैं? उस धाम से आती हैं जो हम आत्माओं के, रूहानी बाप का (भी) घर है। आत्माएँ सब आती रहती हैं, आती रहती हैं, आती रहती हैं, वापस जाने का किसी को रास्ता-नहीं मिलता इसलिए दुनिया की आबादी घटती है कि बढ़ती है? बढ़ती रहती है। सतयुग (के प्रथम जन्म) में सिर्फ नौ लाख चेतन सितारे थे जो इस धरती पर सदा चमकने वाले सितारें हैं वो आसमान के सितारे हैं, वो तो जड़ हैं और ये धरती के सितारे हैं, जो 84 का पूरा चक्र लगाने वाले हैं। उनकी आयु सतयुग के पहले जन्म में 150 वर्ष से भी ऊपर थी। फिर और आत्माएँ उतरीं। जन्म-बाई-जन्म सतयुग में उतरती चली गईं। तो जनसंख्या बढ़ेगी, घटेगी? बढ़ेगी और एवरेज एज घटेगी कि बढ़ेगी? घटेगी। तो पहले जन्म के मुकाबले सतयुग के आखिरी जन्म में एवरेज एज कम हो जाती है। त्रेता में एवरेज एज और कम होगी। उतरने वाली आत्माओं की संख्या ढेर की ढेर बढ़ेगी या कम होगी? बढ़ेगी; क्योंकि दुनिया में श्रेष्ठ ज़्यादा होते हैं या निस्कृष्ट ज़्यादा होते हैं? (निस्कृष्ट ज़्यादा है) प्रजा ज़्यादा होती है या राज घराना ज़्यादा होता है? प्रजा वर्ग की आत्माएँ ढेर होती हैं और राज-परिवार की आत्माएँ बहुत थोड़ी होती हैं। जो सतयुग आदि के बच्चे हैं उनको बाप आ कर पढ़ाते हैं। उनको कहते हैं - तुम मेरे रूहानी बच्चे हो। रूह की स्टेज में (नं.वार) टिकने वाले तुम हो। तुमको मैं पढ़ाता हूँ। 84 के चक्र की बात तुमको बताता हूँ। तुम फिर औरों को बताते रहना।

सतयुग से ले करके त्रेता, द्वापर और कलियुग के अन्त तक ऊपर से नीचे तक आने वाली आत्माओं की संख्या 500-700 करोड़ हो जाती है। अभी कितनी आबादी है? (जिज्ञासु- 700 करोड़) अभी 500 करोड़ से भी ऊपर पहुँच चुकी है। 700-750 करोड़ जैसी (लास्ट में उतरने वाली) आत्माएँ जो सिर्फ एक ही जन्म लेंगी, जैसे रात में बरसात में क्या होता है? पतंगे होते हैं ना, रात में जन्म लेते हैं और सवेरे को सब इधर-उधर (मरे) पड़े हुए हैं, खलास हो जाते हैं। ऐसे ही कलियुग के अंतिम जन्म के अंतिम क्षणों में ढेर की ढेर आत्माएँ उतर पड़ेंगी; लेकिन वो तो कीड़े-मकोड़े हैं। वो ज्ञान उठाएँगे? वो उस तरह का ज्ञान नहीं उठाएँगे जिस तरह की गहराई का ज्ञान तुम बच्चे उठाते हो।

तुम हो पूरे स्वदर्शन चक्रधारी, विष्णु की औलाद, वैष्णव सम्प्रदाय। विष्णु के बच्चे वैष्णव, शिव के बच्चे शैव, ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण। अभी ब्राह्मण तैयार हो रहे हैं। ये ब्रह्मा और ब्राह्मण से बने हुए बच्चे जो हैं वही वैष्णव

सम्प्रदाय बनेंगे। ब्रह्मा सो विष्णु बनता है तो ब्राह्मण सो वैष्णव सम्प्रदाय बनते हैं। तो बताया कि तुम वैष्णव सम्प्रदाय बच्चे, जो पूरे 84 जन्म लेने वाले हो, तुम पहले-2 विष्णु संप्रदाय थे कि शैव संप्रदाय थे? किसके बच्चे थे? (किसी ने कहा- शिव) हरेक बच्चा अपने बाप को फॉलो करता है। फॉलो करने वाले को फॉलोवर कहा जाता है। तुम विष्णु संप्रदाय से भी ऊपर शैव संप्रदाय वाले थे।

भक्तिमार्ग में कहते हैं ना- ब्रह्मा देवताय नमः, विष्णु देवताय नमः, शिव परमात्माय नमः। शंकर को सबसे ऊपर रख देते हैं। देव देव (महादेव) ब्रह्मा देव, फिर ऊपर विष्णु देव, फिर उससे ऊपर महादेव, तो महादेव, शिव की कोटि (समानता) का हो गया। दोनों एक नहीं है। शिव भगवान है, वह सदैव कल्याणकारी है। आज भी कल्याणकारी,आगे भी कल्याणकारी और कल भी कल्याणकारी था। एक क्षण भी अकल्याणकारी नहीं; वह जब इस संसार में आता है, तो एक आत्मा, जिसमें प्रवेश करता है, वह (उनका) मुकर्रर रथधारी व्यक्तित्व है, जिसे मुसलमान लोग आदम कहते हैं। सृष्टि का पहला पुरुष। आदम की औलाद आदमी, हम सब क्या हैं? आदम की औलाद हैं। क्रिश्चियन लोग उसको कहते हैं- एडम, जैनी लोग उसको कहते हैं-आदिनाथ, हिन्दुओं में कहा जाता है-आदिदेव। “त्वं आदिदेवः पुरुषः पुराणः” (गीता-11/38)। पुराने ते पुराना पुरुष कौन है? वह आदिदेव है। उस आदिदेव में वह सुप्रीम सोल प्रवेश करता है। प्रवेश करके पहले उसको आप समान बनाता है। वह शंकर है ना।

शंकर का काम क्या बताते हैं? शंकर ने क्या बड़े ते बड़ा काम किया? जो कोई धर्मपिता ने नहीं किया। इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरुनानक किसी ने भी नहीं किया। ब्रह्मा ने नहीं किया, विष्णु ने नहीं किया, सब उस काम से डरते हैं। वह हिम्मत का काम किसने किया? (शंकर ने) क्या काम किया? विष पिया और इस विषैली दुनिया का संहार भी किया। विषय-विकारों की दुनिया का संहार भी किया। इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट आए, उन्होंने मनुष्यों के बीच में अपने-2 धर्म की धारणाएँ तो स्थापन कर दीं; लेकिन पुरानी परम्पराओं का त्याग किसी ने नहीं कराया। पुरानी घिसी-पिटी परम्पराओं के ऊपर गुरु लोग चलते रहे और अपने फॉलोवर्स को चलाते रहे; क्योंकि डरते थे; क्योंकि वो पुराने धर्म गुरु बैठे हुए हैं। अगर हम उनका मुकाबला करेंगे तो वो हमको ऐसे ही निचोड़ (झिझोड़) देंगे। कोई ने भी मुकाबला नहीं किया, कोई ने अधर्म का विनाश नहीं किया। जो भी धर्म आए वे सब झूठ की ओर बढ़ते चले गए। असत् धर्म बनते चले गए। नई चीज़ सतोप्रधान होती है या पुरानी चीज़ सतोप्रधान होती है? नया मकान है, छोटा बच्चा (या पत्ता) है, सुखदायी होगा या दुःखदायी होगा? सुख देता है। ज्यों-2 पुराना होता जाएगा दुःखदायी (होता जाएगा)। दुनिया की हर चीज़ की यही हालत है। पहले सुखदायी, फिर जितना पुराना हो गया, लास्ट में (बहुत) दुःखदायी। यह जो दुःखदायी सृष्टि है उसमें ये (अनेक) धर्मों की भी यही हालत है। चाहे इब्राहिम का इस्लाम धर्म हो, चाहे क्राइस्ट का क्रिश्चियन धर्म हो...। तो बताया- दुनिया की हर चीज़ पहले सुखदायी, सतोप्रधान, फिर अन्त में दुःखदायी, तमोप्रधान बन जाती है। तो धर्म भी, जितने भी दुनिया में धर्म हैं वे पहले-2 सुखदायी, धर्मपिताएँ भी सुखदायी थे, फिर उनके जो भी फॉलोवर्स आते गए, वे नीची कोटि के होंगे या ऊँची कोटि के होंगे? उन्होंने डब्बा गोल कर दिया। सब धर्म अभी असत् धर्म बन गए। पहले सतोप्रधान थे, अभी तमोप्रधान बन गए। उन तमोप्रधान धर्मों की तमोप्रधानता को खण्डन करने का साहस किसी के अन्दर नहीं था। कोई धर्मपिता के अन्दर नहीं, कोई महात्मा के अन्दर नहीं, कोई विद्वान-पंडित-आचार्य के अन्दर नहीं। सिर्फ बोलते हैं- यह ऐसा है, वह ऐसा है, वह वैसा है, लेकिन खण्डन किसी के बस का होता नहीं।

अन्त में जब परमपिता परमात्मा रूहों का बाप, रूहानी बाप आते हैं, तो जिस पहले मनुष्य में प्रवेश करते है, वह तो जानता है ना- इतनी बड़ी 500 करोड़ की सृष्टि में वह आदम कौन है, वह उसी में प्रवेश करता है और

प्रवेश करके उसको पहले आप समान बनाता है। आप समान का मतलब कैसे? दुनिया में जो भी आत्माएँ आईं आत्म लोक से, रूहों के लोक से, ब्रह्म लोक से, परमधाम से, इस दुनिया में आकर शरीर धारण किया, वे पहले सतोप्रधान थी या तमोप्रधान थी? जब आती हैं तो भगवान के घर से आती हैं, सतोप्रधान थीं, नीचे संग के रंग में आ करके तमोप्रधान बन गईं। तो उन आत्माओं के बीच में सबसे जास्ती पुराना कौन है? जो भी 500-700 करोड आत्माएँ ऊपर से नीचे आईं, उनमें शरीर धारण करने वाली कोई सबसे पुरानी आत्मा है? कौन? (प्रजापिता/आदम) वह सबसे ज़्यादा पुरानी होने के कारण ज़्यादा तमोप्रधान बनेगी कि ज़्यादा सतोप्रधान बनेगी? सबसे ज़्यादा तमोप्रधान वह बनती है। एक राजा का बच्चा हो और एक साहुकार का बच्चा हो और गरीब के बच्चे हों, ये सारे ही चोर, डकैत, लफंगों के कुसंग में आ गए, अब ज़्यादा नीचे कौन गिरेगा? राजा का बच्चा ज़्यादा नीचे गिरेगा। तो यह मनुष्य सृष्टि में जो पहली-2 आत्मा आदम के रूप में मनुष्यों ने पहचानी, वह पहला आदमी सबसे पुराना है और किसकी औलाद है? देवताओं की औलाद है, मनुष्यों की औलाद है, राक्षसों की औलाद है या भगवान की औलाद है? वह डायरैक्ट भगवान की औलाद है। तो उसमें सबसे जास्ती ताकत होगी या कम ताकत होगी? (सबसे जास्ती ताकत) तो जब कुसंग में आएगा, सबसे जास्ती नीचे गिरेगा या कम गिरेगा? (ज़्यादा नीचे) सबसे जास्ती पतित से पतित। तुलसीदास जी ने क्या बोला? “मैं पतितन को राजा।” तुलसीदास ने बोला, अपने ही मुख से बोला- “मैं पतितन को राजा।” उन्होंने ऐसा क्यों बोला? क्योंकि भगवान का महावाक्य है, भगवान खुद आ करके कहते हैं कि- “जब मैं कलियुग के अन्त में इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर आता हूँ, तो जिन-2 आत्माओं ने जो-2 पार्ट बजाया है वह अपने पार्ट की नामवरी कहो, श्रेष्ठता कहो या श्रेष्टता कहो, वह अपने मुख से, अपने लिखे हुए शास्त्रों में उच्चारण करती है माना संगमयुग की अपनी-2 कथा-कहानी, अपने-2 शास्त्रों में लिख मारी है। इसका मतलब क्या हुआ? कि तुलसीदास जी ने रामायण लिखी, सूरदास जी ने सूरसागर लिखा। भागवत किसने लिखी? कृष्ण वाली आत्मा ने भागवत लिखी। मीरा ने मीरा के पद गाए। तो अपने से ज़्यादा अपने चरित्र को, अपनी जीवन-कहानी को कोई दूसरा जान सकता है क्या? (किसी ने कहा- नहीं जान सकता) तो उन्होंने लिख दिया- मैं पतितन को राजा। गलत लिख दिया या सही लिख दिया? सही लिखा।

तो बताया- आगे तुम नहीं जानते थे कि मैं आत्मा कौन? 84 जन्म लेने वाली या कम जन्म लेने वाली? (किसी ने कहा- 84 जन्म) आगे तुमको विश्वास नहीं था। आज मैं आ करके जब तुमको स्वदर्शन चक्रधारी बनाता हूँ तो तुमको विश्वास हो जाता है कि मैं कौन-सी आत्मा हूँ। 84 जन्म लेने वाली सृष्टि की आदि काल की आत्मा हूँ। मनुष्यों में जो पहला मनुष्य आदम है, उस आदम का बच्चा मैं आदमी हूँ। पहली-2 जनरेशन और रूहानी बाप की रूहानी औलाद मैं हूँ, जो पूरी रूहानी स्टेज में टिकने वाली हूँ, एक जन्म भी कम नहीं; क्योंकि अगर एक जन्म भी कम हो जाएगा, इसका मतलब रूहानी स्टेज में पूरा टिका नहीं; इसलिए अधूरी सृष्टि में आना होता है। (या तो) कीड़े-मकोड़ों जैसा बनेगा, जानवर जैसे स्वभाव का बनेगा, नर से नारायण नहीं बन सकता। नर से नारायण जैसा वही बनेगा, जो पढ़ाई के द्वारा नर से डायरैक्ट नारायण बनने की क्षमता रखता हो, भगवान की। नर मनुष्य, नारायण देवता। मनुष्य को देवता कौन बनाएगा? ब्रह्मा बनाएगा? वह तो खुद ही देवता नहीं और है तो नीची कोटि का देवता है। विष्णु बनाएगा? वह भी मीडियम कोटि का देवता है। शंकर बनाएगा? चलो ऊँची कोटि का देवता है; लेकिन है तो देवता। बनाने वाला उससे ऊपर होना चाहिए या नीचे होना चाहिए? (किसी ने कहा- ऊपर होना चाहिए) बाप पावरफुल होता है या बच्चा पावरफुल होता है? बाप पावरफुल होता है। तो रूहों का बाप, रूहानी बाप हम मनुष्यों को मनुष्य से, नर से क्या बनाते हैं? नार+अयण ही बनाते हैं। सतयुग में नहीं बनाते। वहाँ तो देवताएँ रहते हैं। कहाँ बनाते हैं? कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि में जब यह पु. संगमयुग होता है, उस संगमयुग में

आ करके हमको पतित से पावन, नर से नारायण बनाते हैं। यह बात हम आगे भी जानते थे। अब इस बात को जानते हैं कि हमको नर से नारायण जैसा बनाने वाला भगवान बाप अब इस सृष्टि पर आया हुआ है। तो बाप द्वारा ही हमने इस राज़ को जाना है ना! 84 जन्मों के चक्र में हम आते ज़रूर हैं। और कोई दूसरी जनरेशन के, दूसरे धर्म के लोग आएँ या न आएँ; लेकिन हम 84 जन्मों के चक्र में ज़रूर आते हैं। हाँ, यह हो सकता है, थोड़ा कम पुरुषार्थ किया हो। नौ लाख सितारे हैं ना। तो नम्बरवार होंगे या एक जैसे होंगे ? (नम्बरवार होंगे) कोई पुरुषार्थ करके पहले सतोप्रधान बनेगा, कोई बाद में सतोप्रधान बनेगा। कोई पहले रूहानी स्टेज धारण कर लेगा, कोई बाद में करेगा। तो जो बाद में रूहानी स्टेज धारण करेंगे वे आएँगे तो ज़रूर; लेकिन 4, 6, 8, 10, 15 वर्ष कम हो जाएँगे। संगमयुग है ही 100 साल का। ज़्यादा से ज़्यादा सौवीं साल में, अंतिम वर्ष में सतोप्रधान बनेगा; लेकिन 84 जन्म पूरे लेगा या नहीं लेगा? 84 जन्म ज़रूर (लेगा)। इसलिए हम आते ज़रूर हैं। वो नहीं आते हैं, तुम आते हो। यह 'तुम' किससे कहा? जो बच्चे सन्मुख पढ़ाई पढ़ते हैं, उनसे 'तुम' कहा जाता है। जो सन्मुख पढ़ाई नहीं पढ़ते हैं उनसे 'वो' कहा जाता है, दूर वाले और जो पास में बैठकर पढ़ाई पढ़ते हैं, हैं तो पास में, कहेंगे 'यह'; लेकिन उनसे बात नहीं करते। 'यह'- इससे बात करते हैं या तुमसे बात करते हैं? जो सन्मुख बैठने वाले हैं, जो कभी विपरीत बुद्धि नहीं बनते हैं। सन्मुख माने? सदा सामने, सदा सन्मुख। विमुख नहीं; सदैव सन्मुख। सन्मुख और विमुख भी दो तरह का होता है। एक होता है सामने बैठे हैं, सुन भी रहे हैं, समझ भी रहे हैं। कौरवों ने भगवान का ज्ञान सुना भी और क्या समझा नहीं? समझा भी; लेकिन अन्दर से? अन्दर से दुर्भावना भरी हुई थी- इस भगवान की हम ऐसी-तैसी कर दें। शिशुपाल तो सामने ही गाली देता था। तो उन्हें सन्मुख कहा जाएगा या विमुख कहा जाएगा? (कोई) बाहर से दिखाने के लिए सन्मुख और अन्दर से विमुख। तो ज़्यादा खतरनाक कौन-से हुए? जो सन्मुख होते हुए भी विमुख हैं। बाप के विमुख हैं। कोई ऐसे हैं जो बाप के विमुख नहीं होते हैं, परिवार के विमुख हो जाते हैं। अरे बाप, तो बाप के साथ परिवार भी है या नहीं है? (परिवार है) कि बाप संन्यासी है? प्रवृत्तिमार्ग के धर्म की स्थापना करके जाता है या निवृत्तिमार्ग के धर्म की स्थापना करके जाता है? प्रवृत्तिमार्ग की स्थापना करके जाता है। तो मुख से बाप की महिमा नहीं कर पाएँगे और बाप के परिवार की भी महिमा मुख से नहीं कर पाते- ऐसी आत्माएँ, फिर उनको सन्मुख नहीं कहा जा सकता। फिर क्या होता है? आज नहीं तो कल वो नीचे गिरते हैं। नीचे गिरते हैं, उससे क्या होता है? दूसरे धर्म में खिसक जावेंगे, आत्मा अधूरी रह जावेगी। पूरी पढ़ाई नहीं पढ़ पाते। कुसंग में आ जाते हैं। कुसंग में न आने से सत्संग बनता है। सत्संग हम रोज़ आठ घंटे करते रहें और चार घंटे कुसंग कर लें, तो रिज़ल्ट क्या आएगा? कुसंग ज़्यादा लगेगा या सत्संग ज़्यादा लगेगा? सत्संग का ज़्यादा असर होगा? नहीं होगा। कुसंग का झट असर हो जाता है।

बाप तुम बच्चों को 84 की नॉलेज देते हैं- यह पक्का याद करना है। न उन धर्म वालों को देते हैं जो दूसरे धर्म में कनवर्ट हो करके भारतवर्ष को, भारतवासियों को धोखा देकर चले गए, न इनको देते हैं। इनको माने ब्रह्मा की तरफ इशारा किया। इस ब्रह्मा में मैं माँ बन करके पहले आता हूँ। क्या कहते हैं? त्वमेव माता च पिता त्वमेव। पहले माता का नाम आता है। भगवान पहले क्या बनकर आता है? पहले माता बनकर आता है। माता बनकर क्यों आता है? जब बाप का मर्तबा बड़ा है तो पहले ही बाप बनकर आ जाय ना, माता बनकर क्यों आता है? माता से प्यार की पालना अच्छी मिलती है। माता बच्चों को ज़्यादा अच्छा सम्भालती है, सहनशक्ति ज़्यादा होती है। बाप में इतनी सहनशक्ति नहीं होगी। बच्चा है, बच्चे को गोद में लिया और उसको प्यार किया और उसने मुँह में पेशाब कर दी तो बाप क्या करेगा? बाप तो गुस्से में आ जाएगा, थप्पड़ मार देगा और अम्मा? अम्मा तो प्यार करेगी। रात में बच्चे को पास में लेटाएगी? टट्टी-पेशाब कर देगा, तो बाप तो उठा कर फेंक देगा। कहाँ मुसीबत आकर पड़ गई

जिन्दगी में! अम्मा सूखी जगह में बच्चे को लेटाएगी और ठंडी के दिनों में गीली जगह में रात भर खुद ठिठुरती रहेगी। माँ में सहनशक्ति होती है। तो बाप भी, शिव बाप, जो रूहानी बाप है वह भी पहले क्या बनकर आता है? ब्रह्मं+माँ बन करके आता है। क्या जिस्मानी पालना देता है? रूहानी ज्ञान की पालना देता है।

कहते हैं ब्रह्मा के मुख से वेद निकले। क्या निकले? वेद। विद् माने जानना, वेद माने जानकारी का आगार, वेद ज्ञान का भण्डार हैं; लेकिन उस भगवान की वाणी को सब कोई नहीं समझ सकते। जो बड़े-2 कवि होते हैं उनकी कविता के मर्म को सब कोई जानते हैं क्या? फिर बी.ए, एम.ए की पढ़ाई क्यों पढ़ते हैं? वही तुलसीदास के दोहे, वही कवित्त, वही चौपाइयाँ प्राइमरी स्कूल में भी रटाई जाती हैं और वही बी.ए., एम.ए.में भी पढ़ाई जाती हैं। अन्तर क्या हो जाता है? अर्थ में गहराई हो जाती है। उस गहराई को सब कोई नहीं जान सकते। माँ बेसिक तक पढ़ाएगी- कक्षा 2, 4, 5, 8। बी.ए., एम.ए. की पढ़ाई घर को पालने वाली अम्मा नहीं पढ़ाती। वह तो फिर, जो ज़्यादा गहराई में उतरा हुआ हो, वही पढ़ा सकता है। पहले-2 माँ के रूप में बाप आया, ब्रह्मा, जिसका नाम पड़ा- दादा लेखराज। कोई कहे, हम नहीं मानते, वह ब्रह्मा है। अच्छा, तुम न मानो। प्रैक्टिकल सबूत दें तो मानोगे? हाँ मानेंगे। क्या है प्रैक्टिकल सबूत? तो उनको बताओ, एक ही जन्म के अन्दर दुनिया की कोई भी ऐसी संस्था बता दो, जो सारे संसार में इतनी तेजी से फैल गई हो। बताओ, कोई है? आज ब्रह्माकुमारी आश्रम सारी दुनिया में फैले हुए हैं। भारत के गाँव-2 में ब्रह्माकुमारी आश्रम फैले हुए हैं। किसके आश्रम हैं? (ब्रह्मा के आश्रम) ब्रह्मा का नाम क्यों आया? नाम हटा दो। संसार में नाम किसलिए प्रख्यात होता है? कोई काम किया होगा तभी तो नाम प्रख्यात होता है। ब्रह्मा के द्वारा ऐसा काम हुआ है, जो गाँव-2 में, शहर-2 में, सारी दुनिया में वो ब्रह्माकुमारी आश्रम फैले हुए हैं, ये साबित करने के लिए कि ब्रह्मा भी इसी सृष्टि पर होता है, पहले भी हुआ था और अभी फिर हुआ है। भल ब्रह्मा ने शरीर छोड़ दिया है, इसलिए कहते है- ब्रह्मा सूक्ष्मवतनवासी।

जो मनुष्य अचानक शरीर छोड़ते हैं, अकाले मौत होती है तो भूत-प्रेत बनते हैं। ऐसे ही ब्रह्मा(ने)भी अचानक शरीर छोड़ दिया, हार्ट फेल हो गया, पूरी आयु नहीं हुई, पूरी आयु करने के लिए सूक्ष्म शरीर धारण किया हुआ है। 1968-1969 में ब्रह्मा ने शरीर छोड़ दिया। उस ब्रह्मा के लिए बोला 'इस'। तुमको बोलते हैं 'तुम', तुमको पढ़ाता हूँ। मुरली में क्या बोला? "मैं तुम बच्चों को पढ़ाता हूँ, यह बीच में सुन लेता है।" यह भी कहते हैं बाबा तो हमारे साथ है। मैं सुन रहा हूँ। तुमको सुनाते हैं तो मैं भी सुनता जाता हूँ। किसको तो सुनावेंगे ना।(मु.14.3.68 पृ.3 आदि) वेद वाणी जो है, मैंने किसको सुनाई? तुमको सुनाता हूँ। तुम उसकी गहराई में जा सकते हो। यह वेद वाणी की गहराई में जाता ही नहीं। यह जितना सुन लिया, जैसे छोटे बच्चे रट लेते हैं ऐसे रट लेता है, बस। इसको नहीं सुनाता हूँ, तुमको सुनाता हूँ। क्यों? क्योंकि तुम समझते भी हो। सुनने के साथ-2 समझते भी हो। और जब समझोगे तब ही तो धारण करोगे। हाँ, होते नम्बरवार हैं।

84 के (पूरे) चक्र में तुम आते हो। न यह, न इनकी कैटेगरी। न ब्रह्मा आता है, न ब्रह्मा के बच्चे ब्रह्माकुमार-कुमारी आते हैं। तुम हो प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारी। वो हैं सिर्फ अम्मा कुमारी और तुम हो अम्मा और बाप दोनों के कुमार-कुमारी। बढ़िया कौन हैं? कोई बच्चा कहे- मैं अम्मा का बच्चा हूँ। फिर पूछे- अरे अम्मा के बच्चे हो, सच्ची-2 बताओ- तुम किसके बच्चे हो? फिर अम्मा का नाम बताए। तो लोगों को शक पैदा होगा कि नहीं? (होगा) अरे, यह अपने बाप का नाम नहीं बताता। यह क्या दोगला है? या तो इसको माँ ने बताया ही नहीं। बाप का परिचय कौन देता है? माँ देती है या तो माँ जन्म देते समय बीमार पड़ जाती है, तो बच्चे का मुखड़ा माँ ने नहीं देख पाया। भले बीमार पड़ जाती है; लेकिन बीजारोपण किसने किया- ये तो जानती है। अब अगर बीजारोपण करते समय ही बेहोश हो जाए, उससे पहले ही बेहोश हो जाए तो दूसरी बात। जो ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय

विश्व विद्यालय नाम रखा गया, वह बाप ने रखा या अम्मा ने रखा? ब्रह्मा ने रखा। जिस ब्रह्मा ने ये नाम रखा, वह बाप को जानता है क्या? (नहीं जानता) अगर जानता होता तो नाम रखता। मुरलियों में तो बाबा ने बोल दिया, ब्रह्मा के मुख से मुरलियाँ बोलीं ना, माउण्ट आबू से ही बोलीं ना, उसमें तो बोल दिया- तुम बच्चे अपन को ब्रह्माकुमार-कुमारी क्यों कहलाते हो? 'प्रजापिता' शब्द एड करो, तुम बाप के भी बच्चे हो। तुम कोई निवृत्तिमार्ग के थोड़े ही हो। आश्रम का नाम भी क्या रखना है? प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारी। अब वो ब्रह्माकुमार-कुमारी लड़ाई लड़े कि हमारे तो आश्रम का नाम है ही प्रजापिता ब्रह्माकुमारी। अरे, वह तो तुमने बाद में रखा है, जब बाबा ने ज़्यादा फोर्स दिया। पहले तो ब्रह्माकुमारी नाम था या प्रजापिता ब्रह्माकुमारी नाम था? (किसी ने कहा- ब्रह्माकुमारी नाम था) ये जो चार चित्र छपे हुए हैं पुराने-2 फोल्डर, उनमें देखो, उन लिट्रेचर में देखो- ब्रह्माकुमारी विद्यालय लिखा हुआ है या प्रजापिता ब्रह्माकुमारी लिखा हुआ है? ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय लिखा हुआ है। इसका मतलब ब्रह्मा को बाप का पता था ही नहीं। खुद को ही पता नहीं था तो परिचय कहाँ से दे? 1969 में शरीर छोड़ दिया। किसने? ब्रह्मा ने। ब्रह्माकुमारी आश्रम भी बरकरार है, वो पढ़ाई पढ़ने वाले ब्राह्मण भी बरकरार हैं; लेकिन वो बाप को नहीं जानते हैं। हाँ, उनमें से जो ऊँची पढ़ाई पढ़ने वाले, ट्रान्सफर होने वाले निकलते हैं, जो मुरली में बोला है कि तुम बच्चों का क्लास ट्रान्सफर होगा, जिन बच्चों का क्लास ट्रान्सफर हो गया, उनका स्थान भी चेन्ज होगा कि नहीं? पढ़ने का स्थान भी चेन्ज हो जाता है। उनका टीचर चेन्ज होगा कि नहीं? उनका टीचर भी चेन्ज हो जाता है। वो बच्चे तुम बैठे हुए हो, आगे की पढ़ाई पढ़ने वाले, एडवांस पढ़ाई पढ़ने वाले। तुमको 84 के चक्र का पता लग जाता है। न इनको पता लगता है, न दुनिया वाले उन, दूसरे-2 धर्म वालों को पता लगता है। हिन्दू ही तो कनवर्ट हो करके दूसरे धर्म में गए। पहले दुनिया में कौन-सा एक धर्म था? एक ही देवी-देवता सनातन धर्म ही तो था, जो बाद में हिन्दू कहे गए। वही फिर दूसरे धर्म में कनवर्ट होते गए, कनवर्ट होते गए, कनवर्ट होते गए। तो क्या उन्होंने ज्ञान सुनाकर कनवर्ट किया या ग्लानि करके कनवर्ट किया ? हमारे राम-कृष्ण देवताओं की ग्लानि करके उन्होंने कनवर्ट किया। देखो, तुम्हारे राम जंगल में मारे-2 फिरते रहे, उनकी सीता रावण ने चुराई। ऐसा भी कोई राजा होता है? ऐसा राजा कोई सर्वशक्तिवान होता है? ऐसे राजा को तुम भगवान मानते हो, जिसकी औरत उठायी ली? लोगों को शक पैदा हो जाता है, कच्ची-2 आत्माओं को। वो दूसरे धर्म में कनवर्ट हो गईं। वो कनवर्ट होने वालों को भी पता नहीं है कि हम 84 के पूरे चक्कर में आते हैं या नहीं। इनके फॉलोअर्स को भी यह पता नहीं है। तुमको पता है।

तुम ज़रूर 84 के चक्र में आते हो। तुम बच्चों को 84 के चक्र की नॉलेज मैं डायरैक्ट देता हूँ। उन ब्रह्माकुमार-कुमारियों को ब्रह्मा के थ्रू नॉलेज मिली, ब्रह्माकुमार-कुमारियों के थ्रू मिली, दीदी, दादी, दादाओं के द्वारा और तुमको? तुमको कौन देता है? तुमको डायरैक्ट मैं नॉलेज देता हूँ 84 के चक्र की। मैं स्वदर्शन चक्रधारी हूँ; परन्तु प्रैक्टिकल में तुम हो। मैं स्वदर्शन चक्रधारी हूँ- का मतलब क्या हूआ? कि मैं तुम्हारी 84 के चक्र को जानता हूँ। मैं जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता हूँ। जन्म-मरण के चक्र में जो आता है वह पूर्वजन्म की बात जानता है कि भूल जाता है? भूल जाता है। तुम तो जन्म-मरण के चक्र में आने वाले हो। तुम तो भूल जाते हो। असुल में तो मैं स्वदर्शन चक्रधारी हूँ; परन्तु प्रैक्टिकल में मैं 84 के चक्र में नहीं आता हूँ। क्यों? जो 84 के चक्र में आवे वह फिर नम्बर में भी आवे। 500-700 करोड़ मनुष्य आत्माएँ ऊपर से नीचे आती हैं न। तो यह बड़ी रुद्रमाला है। कोई किस नम्बर पर आता है, कोई किस नम्बर पर आता है, उनके नम्बर बन जाते हैं कि नहीं? (बन जाते हैं) मैं उस नम्बर में नहीं आता हूँ। मैं कोई माला के नम्बर में नहीं आता हूँ। 16000 की माला है, 108 की माला है, 8 की माला है, ब्रह्मा की 1000 भुजाओं की माला है। श्री-श्री 1008 कहा जाता है। मैं इन माला के चक्करों में, कोई

नम्बर में नहीं आता हूँ; परन्तु तुम तो प्रैक्टिकल में आते हो। आते हो, इसका मतलब आज नहीं तो कल तुमको पता चलेगा कि मैं कौन-सी माला का मणका हूँ। 8 का मणका हूँ, जो शिव भगवान के सर पर चढ़ाई जाती है, 108 की माला का मणका हूँ, जो गले में आती है या 16000 की माला का मणका हूँ जो भुजाओं में चारों तरफ लपेटी जाती है, सहयोगी बनते हैं। कौन-सी माला का मणका हूँ? या सिर्फ 33 करोड़ देवताओं की माला है, उसमें आता हूँ? यह तुम प्रैक्टिकल में पार्ट बजाते हो तो तुम जानते हो। कब जानते हो? अभी इस संगमयुग में तुमको पता चलेगा। तुम आत्मा रूपी एक्टर हो, जन्म-जन्मांतर तुमने इस रंगमंच पर शरीर रूपी कपड़े बदल-2 करके पार्ट बजाए हैं। तुम होशियार एक्टर हो या बुद्धू एक्टर हो? (होशियार एक्टर) होशियार तो उसको कहा जाएगा जो अपने पार्ट को पहचाने कि कौन-से टाइम पर हमको क्या पार्ट बजाना है। पहले-2 हमको ऐसा पार्ट बजाना है, त्रेता के आदि में यह पार्ट बजाना है, द्वापर के आदि में ऐसा पार्ट बजाना है, कलियुग में यह पार्ट बजाना है, पृथ्वीराज चौहान का पार्ट बजाना है, मीरा का पार्ट बजाना है। कौन-सा पार्ट बजाना है सो मालूम होना चाहिए कि नहीं? देहअभिमानी को मालूम होगा या जो अपन को आत्मा समझेगा, दूसरों को आत्मिक रूप में देखेगा उसको पता चलेगा? (जो अपने को आत्मा समझेगा)

पहले यह प्रैक्टिस करनी पड़े। क्या प्रैक्टिस करनी पड़े? कि अपन को स्टार आत्मा देखो और दूसरों को भी स्टार आत्मा देखो; देह का ढाँचा न देखो। रूहानी दृष्टि बने; दैहिक दृष्टि न बने। विकार कब आते हैं? देह की दृष्टि (से) देखते हैं तो विकार आता है। अगर आँखों को भी देख लिया, तो भी देह की दृष्टि आ जाती है तब (भी) विकार आता है। काम विकार आता है, क्रोध विकार आता है। अरे! यह इतना नीच आदमी! मैं इतना ऊँचा, ऊँची पदवी वाला, इसने हमको ऐसी बात कैसे कह दी! बस, हो गए शत्रु। तो क्रोध भी आता है। लोभ भी रूहानी दृष्टि से आता है या देहभान की दृष्टि से आता है? लोभ भी देहभान की दृष्टि से आता है। पदार्थों के प्रति लालच पैदा होता है, वह भी लोभ है। देह के पदार्थ हैं ना। पदार्थों का कनेक्शन देह से है या आत्मा से है? देह से है। तो लोभ आ जाता है। रसगुल्ला खाऊँ। मोह, मोह का कनेक्शन देह से है या आत्मा से है? (देह से है) आत्मा बन गए तो 84 जन्म में 84 बाप मिलेंगे। 84 जन्मों में पता नहीं कितने बच्चे हमारे बनेंगे। 84 जन्मों में पता नहीं कितने-2, मित्र-संबंधी बनेंगे। किसके-2 प्रति मोह रखेंगे? आज इसके साथ पार्ट बजाना है, कल उसके साथ पार्ट बजाएँगे, परसों उसके साथ पार्ट बजाएँगे, चोले बदलते जाएँगे और पिछले चोले के साथ जो संबंधी थे उनसे कोई कनेक्शन रहेगा ही नहीं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार- ये पाँचों विकार कब आते हैं? देहभान से आते हैं।

बताया कि तुम प्रैक्टिकल में 84 के चक्र का पार्ट बजाते हो; इसलिए तुम स्वदर्शन चक्रधारी हो। मैं हूँ तो स्वदर्शन चक्रधारी। मैं जानता हूँ कि मैं इस 5000 वर्ष के सृष्टि चक्र में सिर्फ एक ही बार अंतिम जन्म में आ करके तुम बच्चों को पढ़ाई पढ़ाकर नर से नारायण जैसा देवता बना देता हूँ और तुम्हारे 84 जन्मों की कहानी भी बता देता हूँ। मैं डायरैक्ट नहीं बताता हूँ। जैसे बीज गणित होता है, रेखा गणित होता है, तो उसमें इतना-2 जोड़ा तो इज़ इक्वल टू इतना आया, ऐसे मैं फ़ार्मूला बता देता हूँ। वो फार्मूले तुम लगाते जाओ और अपने जन्मों को पहचानते जाओ; लेकिन पहचानेंगे तब जब तुम्हारी रूहानी दृष्टि बनेगी, आत्मिक दृष्टि बनेगी। तब ही 84 के चक्र का ज्ञान तुम्हारे आत्मा रूपी पार्टधारी को होगा; देहभान होगा तो नहीं होगा।

इन बातों से समझ जाना चाहिए कि शिवबाबा में सारा ज्ञान है। किसमें सारा ज्ञान है? शिव में, अकेला नहीं बताया, दो शब्द बोले- शिव, बाबा। यह क्यों? शिव नाम है बिन्दी का। यह बिन्दी आत्मा का नाम कभी होता ही नहीं है। ऐ आत्मा! इधर आओ- ऐसे कोई कहा जाता है (क्या)? नाम शरीर के ऊपर पड़ता है या आत्मा के ऊपर पड़ता है? शरीर के ऊपर पड़ता है। तो तुम सब शरीर धारण करते हो; इसलिए तुम्हारे शरीर का नाम पड़ता है। मेरे

शरीर का नाम नहीं है। मैं शरीर धारण ही नहीं करता। मैं गर्भ से जन्म लेता ही नहीं। मैं तो अजन्मा हूँ। मेरी बिन्दु आत्मा का ही नाम 'शिव' है। जब मेरी बिन्दु आत्मा का ही नाम शिव है तो लोगों ने इतना बड़ा लिंग बनाकर क्यों पूजा करना शुरू कर दिया? इसका कारण क्या? इसका कारण यह कि मैं बिन्दु आत्मा जब तक बड़ा रूप धारण न करूँ तब तक पार्ट कैसे बजाऊँगा! तुमको पढ़ाऊँगा कैसे! पढ़ाऊँगा? (नहीं) तुम्हारी माता कैसे बनूँगा? पिता कैसे बनूँगा? भगवान के साथ तो सर्व सम्बन्ध होते हैं। मैं तुम बच्चों के साथ सर्व सम्बंध कैसे निभाऊँगा ? साकार में प्रवेश करना पड़े। तो जिस साकार में मैं प्रवेश करता हूँ वह पुरुषार्थ करके अपने को बिन्दु बना लेता है। क्या बनाता है? रूह बना लेता है। निराकारी स्टेज में स्थिर हो जाता है। जैसे कि कान हैं ही नहीं, आँख हैं ही नहीं। देखते हुए न देखना, सुनते हुए न सुनना। कलंकीधर की सारी दुनिया ग्लानि करती है। ग्लानि, कलंक लगाती है? उसको कोई असर होता है? कोई असर नहीं। तो कान हैं कि नहीं? कान हैं या नहीं हैं? कान कहाँ हैं? वह बिन्दु को कान हैं? (नहीं हैं) कान नहीं हैं? जिसमें प्रवेश करता है उसके कान नहीं हैं? उसको कान हैं; लेकिन उसके कानों से सुन करके उसको कोई असर(नहीं पड़ता।); क्योंकि उन कानों से उसका लगाव ही नहीं है, उस देह से उसका लगाव नहीं है।

लगाव होने से पार्शियालिटि पैदा होती है। पार्शियालिटि कब पैदा होती है? पक्षपात कब होता है? कोई से लगाव होता है तो पक्षपात पैदा होता है। मेरा कोई भी देहधारी से कोई लगाव नहीं है; इसलिए मैं पक्षपाती नहीं हूँ। मैं साक्षी द्दष्टा हूँ। इसलिए बताया कि तुमको समझ जाना चाहिए कि शिवबाबा में ही सारा ज्ञान है। शिव बिन्दु में ज्ञान नहीं कहेंगे। बिन्दु में क्यों नहीं कहेंगे? अरे, स्पीकर रखा हुआ है, और कोई कहे कि इस स्पीकर में आवाज़ भरी हुई है, फिर वह कभी बजे ही नहीं, तो कहेंगे इसमें आवाज़ भरी हुई है? आदमी प्रैक्टिकल में देखेगा ना- इसमें आवाज़ भरी हुई है या नहीं भरी हुई है? रिकॉर्ड है, रिकॉर्ड भरा हुआ है या नहीं भरा हुआ है? ऐसे ही उस सुप्रीम सोल में क्या रिकॉर्ड भरा हुआ है? वह जब तक शरीर धारण न करे तब तक पता ही नहीं चलेगा कि उसमें ज्ञान है या नहीं है। इसलिए मुरली (26.10.68 पृ.2 मध्य) में बोला है- "पता कैसे चलता है यह शिव बाबा भगवान है? ऐसा ज्ञान सुनाते हैं जो दुनिया में कोई ने भी न सुनाया हो। वह तुरिया है। सारी दुनिया के मुकाबले बिल्कुल अलग है। तुरिया ज्ञान सुनाता है। ऐसा स्पेशल ज्ञान दुनिया में और कोई सुनाय नहीं सकता। वो निराकार ज्योति बिन्दु शिव साकार में प्रवेश करता है और साकार में प्रवेश करके उस पिता प्रजापिता के द्वारा, जो सारी मनुष्य सृष्टि का पिता है, उसका भी पिता बनता है। आत्माएँ जो शरीर धारण करने वाली हैं उनका पिता कौन? सभी देहधारियों का पिता कौन? प्रजापिता, और प्रजापिता का पिता कौन? शिव। मैं तुम्हारा ग्रैंड फादर हुआ। मैं कौन हूँ? मैं तुम्हारा बाबा हूँ। शिव में सारा ज्ञान है, ये भी नहीं कह सकते। देहधारी प्रजापिता में सारा ज्ञान है, यह भी नहीं कह सकते। क्या कहें? शिव बाबा में सारा ज्ञान है। इसलिए दुनिया में 33 करोड़ देवताएँ हों, चाहे दुनिया के सारे ही राक्षस हों, चाहे दुनिया के सारे ही मनुष्य हों, किसी का भी नाम शिव के साथ नहीं जोड़ा गया। एक शंकर ही है जगत पिता, "जगतं पितरम्" कहा जाता है ना, उसका नाम मेरे साथ जोड़ा जाता है। क्या कहते हैं? शिव शंकर भोलेनाथ। शिव के साथ ब्रह्मा का भी नाम नहीं जोड़ेंगे, शिव के साथ विष्णु का भी नाम नहीं जोड़ेंगे। किसका नाम जोड़ेंगे? शंकर का नाम। कोई देवी का नाम जोड़ते हैं? देवी को भी तीसरा नेत्र दिखाया जाता है। लेकिन उसका नाम शिव के साथ नहीं जोड़ा जाता है। ओम् शांति।

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

01.01.2025